School of Social Sciences

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन : वर्तमान आजमगढ़ मण्डल के विशेष संदर्भ में (1857–1947 ई0)" "**BHARTIYA SWATANTRATA ANDOLAN : VARTAMAN AZAMGARH MANDAL KE VISHESH SANDARBH MEIN (1857-1947 A.D.)**" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in **" Medieval and Modern History"** under **'School of Social Sciences'** of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year **2023**.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of **Prof. Santosha Kumar** and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Research Supervisor
Prof. Santosha Kumar
Faculty of Subject - **Medieval and Modern History**

Candidate Name
Rajesh Singh
En. No.- 2200501

Prof. Santosha Kumar
Director of School of Social Sciences

Prof. P.K. Pandey
Secretary of RDC/ Director, R&D Cell

"भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन : वर्तमान आजमगढ़ मण्डल के विशेष संदर्भ में (1857–1947 ई0)"

" BHARTIYA SWATANTRATA ANDOLAN : VARTAMAN AZAMGARH MANDAL KE VISHESH SANDARBH MEIN (1857-1947 A.D.)"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN MEDIEVAL AND MODERN HISTORY

To

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

By

Name of the Candidate :- Rajesh Singh

Enrollment No. :- 2200501

Under the Supervision of

Prof. Santosha Kumar

Faculty of Medieval and Modern History

School of Social Sciences

U.P. Rajarshi Tandon Open

University, Shantipuram, (Sector-F), Phaphamau, Prayagraj - 211013

Rajesh Singh

सारांश

प्रस्तुत शोध सार **"भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन : वर्तमान आजमगढ़ मण्डल के विशेष संदर्भ में (1857–1947 ई0)"** विषय की रूप रेखा है। इस शोध कार्य में आजमगढ़ मण्डल में आने वाले तीन जिलों – आजमगढ़, मऊ एवं बलिया के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान का अध्ययन किया जायेगा। इस शोध की परिकल्पना भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में आजमगढ़ मण्डल का योगदान एक क्षेत्रीय इकाई के रूप में सराहनीय था, का अध्ययन करना है। इस शोध कार्य का उद्देश्य आजगमढ़ मण्डल के योगदान का विश्लेषण के साथ नवीन दृष्टिकोण का विकास करना है। इस शोध कार्य के लिए ऐतिहासिक शोध प्रविधि का सहारा लिया जायेगा। यह शोध कार्य अलग–अलग बिन्दुओं पर पाँच अध्यायों में करने का प्रयास किया गया है। इसमें फूलबदन सिंह की पुस्तक आजमगढ़ का स्वाधीनता संग्राम, देवनाथ उपाध्याय की पुस्तक बलिया में क्रांति और दमन, कन्हैयाला मिश्र की पुस्तक उत्तर प्रदेश स्वतंत्रता संग्राम की एक झांकी के साथ दुर्गा प्रसाद गुप्त की पुस्तक स्वतंत्रता संग्राम की साहित्यिक समीक्षा की गई है।

प्रमुख शब्द – स्वतंत्रता, आंदोलन, मण्डल, योगदान, क्षेत्र

Rajesh Singh

विषय–वस्तु

क्र0सं0	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	परिचय	(1–2)
2.	साहित्य समीक्षा	(2–3)
3.	अध्ययन क्षेत्र	(4)
4.	अध्ययन के उद्देश्य	(4)
5.	अनुसंधान क्रियाविधि	(4–5)
6.	अनुसंधान के अपेक्षित परिणाम	(5–6)
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची		(6–7)
साहित्यिक सूचना रिपोर्ट		

RajeshSingh

प्रस्तावना –

विश्व के अनेक देशों में स्वतंत्रता के लिए आंदोलन हुए है। उनमें भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । स्वतंत्रता आंदोलन के माध्यम से ही भारतीयों ने निरंतर संघर्ष कर लगभग दो सौ वर्षों के अमानवीय अंग्रेजी शासन से मुक्ति पायी । अंग्रेजी शासन से मुक्ति सहज एवं सरल नहीं थी, क्योंकि कि इस शासन के बारे में यह कहा जाता है कि उनके शासन में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था।

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही छोटे-छोटे विद्रोहों के रूप में प्रारम्भ हो चुका था, लेकिन व्यापक रूप से इसकी झलक 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान मिलती है । 1857 के विद्रोह की असफलता ने भारतीयों को उनकी कमियों की ओर ध्यान आकर्षित किया । भारतीयों ने अपने को संगठित करने के लिए अनेक संगठन की स्थापित किये । इस संगठनों में 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी । इसके माध्यम से भारतीयों को जागृत करने एवं स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान देने के लिए प्रेरित किया । भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान किसानों, जनजातियों, क्रांतिकारी घटनाओं एवं जन आंदोलनों ने योगदान दिया । बंगाल, बिहार एवं संयुक्त प्रांत के साथ सम्पूर्ण भारत में किसान एवं जनजातीय आंदोलन हुए । भारत में क्रांतिकारी घटनाएँ मुख्यतः दो चरणों में दिखाई देती है, 19वीं शताब्दी के अन्त में एवं असहयोग आंदोलन के बाद प्रमुख रूप से दिखाई देती है । जन आंदोलनो के रूप में स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं भारत छोड़ो आन्दोलन के माध्यम से भारतीयों ने अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष किया । इन गतिविधियों ने अंग्रेजों को मजबूर किया कि भारत को स्वतंत्रता प्रदान की जाए ।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही सम्पूर्ण भारत एक सूत्र में बँधने लगा औंर धीरे-धीरे भारत के सभी क्षेत्रों में अंग्रेजों के विरूद्ध विभिन्न गतिविधियाँ दिखनें लगी । इसमें संयुक्त प्रान्त ने भी भाग लिया । संयुक्त प्रान्त के एक छोटे से हिस्से आजमगढ़ मण्डल में भी स्वतंत्रता संघर्ष सम्बन्धी घटनाएँ हुई ।

Rajesh Singh

आजमगढ़ मण्डल में संघर्ष के दौरान अंग्रेजों के विरूद्ध अनेक कार्य हुए। जिसमें किसानों, छात्रों, महिलाओं ने संघर्ष किया। रेलपटरियों को नष्ट करना हो, पुलिस थानों पर कब्जा करना हो, आंदोलन करने वालों को छुपे रूप से मदद करना हो। बलिया में अंग्रेजों के विरूद्ध समानानन्तर सरकार की स्थापना भी इसी दौरान की गई। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान राष्ट्रीय नेताओं का आजमगढ़ मण्डल की धरती पर आगमन होता रहा रैलियों का आयोजन किया जाता रहा, जिससे स्वतंत्रता संघर्ष को मजबूती मिलती रही।

साहित्य समीक्षा–

प्रस्तावित शोध विषय पर उपलब्ध कुछ प्रमुख पुस्तकों की समीक्षा –

- सिह, फूलबदन, आजमगढ़ का स्वाधीनता संग्राम (1857-1947) में आजमगढ़ के स्वाधीनता आंदोलन में योगदान को प्रस्तुत किया है। इतिहास की अनेक पुस्तके लिखी गई है लेकिन उसमें आजमगढ़ के योगदान के बारे में बहुत ही कम वर्णन किया गया है, इस दृष्टिकोण से लेखक का कार्य बहुत ही सराहनीय एवं प्रशंसनीयहै। आजमगढ़ की घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। जो स्वाधीनता आंदोलनो के दौरान आजमगढ़ में घटी थी और आन्दोलनों में सहयोगी रही लेकिन इतिहास की पुस्तकों की भाँति इसकी भी कुछ सीमाएँ हैं।
- उपाध्याय, देवनाथ, बलिया में क्रांति और दमन पुस्तक में आजमगढ़ मण्डल के बलिया क्षेत्र के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। उसमें बलिया में होने वाली घटनाओं के बारे में बताया है और अंग्रेजों द्वारा उनसे निपटने के लिए किये गये प्रयासों का वर्णन किया है। इस प्रकार यह पुस्तक स्वाधीनता आंदोलन में बलिया के योगदान पर दृष्टिपात करती है लेकिन यह बलिया से सटे क्षेत्रों का विस्तृत अध्ययन नहीं करती है। मिश्र, कन्हैयालाल, उत्तरं प्रदेश स्वतंत्रता संग्राम की एक झाँकी पुस्तक में सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के स्वाधीनता आंदोलन में योगदान को दर्शाती है इसमें

Rajesh Singh

आमजगढ़ मण्डल के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है। इस पुस्तक में लेखक ने सम्पूर्ण क्षेत्रों के अवलोकन का प्रयास किया है जिससे

हमें उत्तर प्रदेश के अन्दर घटित होने वाली वे घटनाएँ जिन्होंने आंदोलन के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इसमें प्रमुख आंदोलनों के दौरान उत्तर प्रदेश में घटित होने वाली घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है यह पुस्तक हमें प्रेरणा प्रदान करती है। इसमें भी कुछ स्थानीय महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में जानकारी नहीं प्राप्त होती है।

- गुप्त, दुर्गा प्रसाद, स्वतंत्रता संग्राम पुस्तक में लेखक ने बलिया में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बलिया में घटित होने वाले क्रिया कलापों का वर्णन किया है इसमें स्वतंत्रता संग्राम में आजमगढ़ मण्डल से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है और उसके प्रति एक समझ विकसित होती है इस दौरान आंदोलन में योगदाने देने वाले प्रमुख व्यक्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है कि किन परिस्थितियों में हमारे पूर्वजों ने कार्य किया था। इस पुस्तक में समग्रता में कमी महसूस होती है।

Rajesh Singh

3. अध्ययन क्षेत्र –

शोध विषय भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन : वर्तमान आजमगढ़ मण्डल के विशेष संदर्भ में, पर आधारित है। इस शोध की पृष्ठभूमि के रूप में हम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली स्वतंत्रता सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करेंगे। शोध के मूल क्षेत्र आजमगढ़ मण्डल का अध्ययन करते समय हम आजमगढ़ मण्डल में आने वाले तीन जिलों – आजमगढ़, मऊ एवं बलिया में होने वाली विभिन्न स्वतंत्रता सम्बन्धी घटनाओं का अध्ययन करेंगे। आजमगढ़ मण्डल के आजमगढ़ जिले में आठ तहसीलें आती हैं। जो हैं – आजमगढ़ सदर, बूढ़नपुर, लालगंज, मार्टिनगंज, मेहनगर, निजामाबाद, फूलपुर एवं सगड़ी। मऊ जिले के अंतर्गत चार तहसीलें हैं – मऊसदर, घोसी, मधुबन एवं मुहम्मदाबाद गोहना। बलिया जिला छः तहसीलों में बंटा हुआ है। जिसमें हैं – बलिया सदर, बेल्थरा रोड, बाँसडीह, बैरिया, रसड़ा एवं सिकन्दरपुर। इसमें हम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की तत्काल परिस्थितियों के साथ आजमगढ़ मण्डल में होने वाली क्रांतिकारी गतिविधियों का अध्ययन करेंगे। शोध में किसानों एवं महिलाओं की स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान आजमगढ़ मण्डल में निभाई गई भूमिका का अध्ययन करेंगे।

4. अध्ययन के उद्देश्य –

– भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में आजमगढ़ मण्डल के योगदान का विश्लेषण करना।

– भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में आजमगढ़ मण्डल की भूमिका का पुर्नमूल्यांकन करना।

– आजमगढ़ मण्डल में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान होने वाली क्रांतिकारी गतिविधियों को जानना।

– आजमगढ़ मण्डल में स्वतंत्रता आंदोलन दौरान किसानों एवं महिलाओं की भूमिका जानना।

– आजमगढ़ मण्डल के प्रमुख क्रांतिकारियों की भूमिका का अध्ययन करना।

5. अनुसंधान क्रियाविधि –

शोधों के लिए अलग–अलग शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। चूँकि यह शोध इतिहास विषय से सम्बन्धित है। अतः इसमें ऐतिहासिक शोध प्रविधि का सहारा लिया जायेगा। इसमें प्राथमिक स्रोतों के रूप में तत्कालीन साहित्य एवं अभिलेखागारों का प्रयोग किया जायेगा, साथ ही साथ द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया जायेगा।

अनुसंधान क्रियाविधि वह सुव्यवस्थित प्रक्रिया होती है जिसके माध्यम से शोधकर्ता किसी समस्या या विषय का अध्ययन करता है। जिससे विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकें। शोध

Rajesh Singh

क्रियाविधि शोध को संरचित वैज्ञानिक एवं तार्किक बनाती है। जिससे परिणामों की विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित होती है। यह शोध को दिशा प्रदान करते हुए शोधकर्ता को सहायता प्रदान करती है।

शोध क्रियाविधि के प्रमुख्य तत्व निम्न है :–

– शोध समस्या का चयन।

– साहित्य समीक्षा।

– शोध डिजाइन।

– नमूना चयन।

– डेटा संग्रहण।

– डेटा विश्लेषण।

– निष्कर्ष।

शोध प्रक्रिया का प्रारम्भिक चरण शोध समस्या का चयन एवं उसका परिभाषीकरण होता है। इसके बाद विषय से सम्बन्धित शोधें एवं साहित्यों का अध्ययन किया जाता है तथा शोध का आधार तैयार किया जाता है। जो शोध में नयापन लाने का कार्य करता है। इसके बाद शोध डिजाइन तैयार किया जाता है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि शोध कार्य कैसे किया जायेगा। शोध विषय से सम्बन्धित क्षेत्र या नमूना का चयन किया जाता है, उससे सम्बन्धित डाटा एवं स्रोतों का एकत्रण किया जाता है। पुनः स्रोतों के विश्लेषण के माध्यम से निष्कर्ष प्राप्त किया जाता है। शोध क्रियाविधि को मुख्यतः गुणात्मक शोध एवं मात्रात्मक शोध में बाँट सकते है।

6. अनुसंधान के अपेक्षित परिणाम –

प्रस्तावित शोध विषय का सम्बन्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आजमगढ़ मण्डल के योगदान का अध्ययन करना है क्योंकि भारतीय स्वंतत्रता संघर्ष में भारत के सभी क्षेत्रों के निवासिनों का योगदान किसी न किसी रूप में था, लेकिन सभी के संघर्षो को उचित स्थान नहीं प्राप्त हो सका है। इस सम्बन्ध में आजमगढ़ मण्डल का अध्ययन कर एक क्षेत्रीय इकाई के रूप में महत्व को उजागर करना है इस शोध के माध्यम से आजमंगढ़ मण्डल की पृष्ठभूमि को जान सकेंगे। स्वतंत्रता आंदोलन के समय आजमगढ़ मण्डल की परिस्थितियों को जान सकेंगे। इससे हम जान पायेंगे कि इस समय आजमगढ़ मण्डल में क्या–क्या क्रांतिकारी गतिविधियाँ संचालित हुई थी। स्वतंत्रता आंदोलन में आजमगढ़ मण्डल के किसानों एवं महिलाओं की भूमिका को जान

Rajesh Singh

पायेंगे। साथ–ही–साथ आजमगढ़ मण्डल के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों एवं उनके द्वारा किये गये कार्यों को जान पायेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

- नेहरू, जवाहर लाल (1946), डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, यूके, मेरिडियन बुक्स।
- सेन, सुरेन्द्रनाथ (2014), 1857 का स्वतंत्रता संघर्ष, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय।
- दत्त, रमेशचन्द्र (1981) भारत का आर्थिक इतिहास, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय।
- ताराचन्द (2007), भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय।
- सावरकर, विनायक दामोदर (2020), 1857 का स्वतंत्र्य समर, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन।
- गुप्त, मन्मयनाथ (1962), राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास, आगरा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी।
- गुप्त, मन्मयनाथ (1966) भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास, लखनऊ, आत्माराम एण्ड सन्स
- गुप्त, दुर्गा प्रसाद (1986) स्वतंत्रता संग्राम, बलिया, गौरव ग्रन्थ माला प्रकाशन।
- राय, झारखण्डे (1970) क्रांतिकारियों के संस्मरण, दिल्ली,पिपुल्स, पब्लिशिंग हाउस
- विद्या, वाचस्पति इन्द्र, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल
- सिंह, अयोध्या (1946) भारत का मुक्ति संग्राम का इतिहास, नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल

Rajesh Singh

- मिश्र, कन्हैयालाल (1962) उत्तर प्रदेश स्वतंत्रता संग्राम एक झांकी, लखनऊ, सूचना विभाग उत्तर प्रदेश
- डा० ताराचन्द (1969) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास भाग 2 एवं भाग 3, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय।
- सरकार, सुमित, माडर्न इण्डिया (1885-1947), नई दिल्ली, एस.जी.वासनी, किताब महल।
- उपाध्याय, देवनाथ (1946) बलिया में क्रांति और दमन इलाहाबाद।
- सिंह, फूलबदन (1974) आजमगढ़ का स्वाधीनता संग्राम (1857-1942 ई०) आजमगढ़, जिला स्वाधीनता संग्राम सैनिक संघ
- शाहा, रणजीत (2015), उत्तर प्रदेश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, इलाहाबाद, वाणी प्रकाशन

गजेटियर्स –

- आजमगढ़ गजेटियर्स
- बलिया गजेटियर्स
- मऊ गजेटियर्स

Websites–

- https://Sodhganga, infiltnet.ac.in
- https://www.azagmgarh.in

Rajesh Singh

सहित्यिक सूचना रिपोर्ट–

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Submission Information

Author Name	Rajesh Singh
Title	BHARTIYA SWATANTRATA ANDOLAN : VARTAMAN AZAMGARH MANDAL KE VISHESH SANDARBH MEIN (1857-1947 A.D.)"
Paper/Submission ID	3607109
Submitted by	santoshauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-05-13 11:03:04
Total Pages, Total Words	11, 2504
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **7 %**

Sources Type

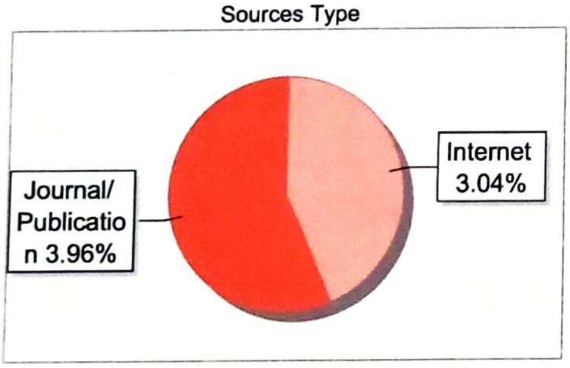

Report Content

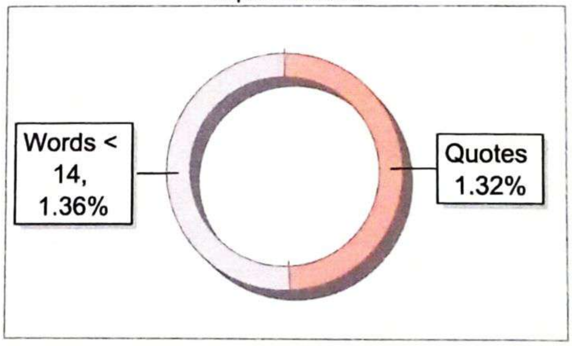

Exclude Information

Quotes	Not Excluded
References/Bibliography	Not Excluded
Source: Excluded < 14 Words	Not Excluded
Excluded Source	**0 %**
Excluded Phrases	Not Excluded

Database Selection

Language	Non-English
Student Papers	Yes
Journals & publishers	Yes
Internet or Web	Yes
Institution Repository	Yes

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

7	6	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	nios.ac.in	4	Publication
2	www.slideshare.net	1	Internet Data
3	pdfcoffee.com	1	Internet Data
4	translate.google.com	1	Internet Data
5	pdfcookie.com	1	Internet Data
6	www.studocu.com	<1	Internet Data